“हीरक जयंती वार्षिकोत्सव में पदक वितरण एवं सम्मान समारोह”

प्रेस विज्ञप्ति

#DiamondJubilee मेडिकल कॉलेज की डायमंड जुबली में जुटे 1963 के छात्र

फर्स्ट बैच के छात्रों की सीख- पॉजिटिव सोचें और वही करें जो अच्छा लगता है

पत्रिका ZOOM रिपोर्टर
patrika.com

रायपुर. जीवन में सबसे ज्यादा जरूरी है खुशी। खुशी पैसों से नहीं खरीदी जा सकती। काम वही करें जो आपको अच्छा लगता है। तभी आप उस क्षेत्र में आगे बढ़ पाएंगे। कई मोड़ ऐसे आते हैं जब हम हताश हो जाते हैं, ऐसे में हमारी सोच पॉजिटिव होनी चाहिए। हर हाल में खुश रहने की आदत डालनी चाहिए। कुछ इस तरह के विचार नई पीढ़ी के लिए सुनने को मिले अटल बिहारी वाजपेई ऑडिटोरियम में। अवसर था मेडिकल कॉलेज की डायमंड जुबली का। यहां 1963 (पहली बैच) के पूर्व छात्र आकर्षण का केंद्र बने थे। कार्यक्रम में कॉलेज के एक्स डीन और प्रोफेसर्स व मेधावी छात्रों को पदक से नवाजा गया। मुख्य अतिथि राज्यपाल महोदय विश्वभूषण हरिचंदन उपस्थित रहे। अध्यक्षता आयुष विवि के कुलपति डॉ. एके चंद्राकर ने की।

कार्यक्रम में मौजूद पहली बैच (1963) के छात्र।

साक्षी ने गाया- आओ हुजूर तुमको, सितारों...

साक्षी कन्नौजे ने आओ हुजूर तुमको सितारों में ले चलूं... गाकर सभी का दिल जीत लिया। आशा भोंसले के गाए गीत को साक्षी ने बेहतरीन अंदाज में निभाया। इसके अलावा अन्य छात्रों ने जीया जले जां जले... गाया। एक छात्रा ने रेशम का रुमाल में डांस कर माहौल बना दिया।

एडमिशन ही रोचक

सुंदरनगर निवासी डॉ. मुरारीलाल शर्मा फर्स्ट बैच के छात्र रहे हैं। पत्रिका से अपने संस्मरण साझा करते हुए कहा कि मेरा दाखिला होना ही अपने आप में रोचक कहानी रही है। इंदौर से मेरा नाम लिस्ट में आ गया था लेकिन यहां मुझसे एडमिशन लेटर मांगा जा रहा था। एक और लड़का था शरद। वह एसपी रामसिंह ठाकुर का बेटा था। मैं घर में उदास बैठा था। एसपी साहब हमारे पड़ोसी थे। जब उनको पता चला कि मेरा लेटर नहीं आया है। उनने मेरे सामने ही इंदौर फोन लगाया और टेलीग्राम से दाखिला पत्र मंगवाया।

मरीज का जीवन बचाना डॉक्टर की पहली प्राथमिकता : राज्यपाल

राज्यपाल ने कहा कि इस कॉलेज का गौरवशाली इतिहास रहा है। इसका नाम देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रखा गया है। यह बहुत गर्व और सम्मान की बात है। सन 1963 में इसकी शुरुआत 60 विद्यार्थियों से हुई थी जो वर्तमान में 230 विद्यार्थियों के साथ प्रदेश का सबसे बड़ा मेडिकल कॉलेज बन गया है। कोविड 19 के महामारी के समय डॉक्टरों ने मानव समाज की रक्षा के लिए जो योगदान दिया है उसको भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने रामायण के एक प्रसंग का जिक्र करते हुए कहा कि एक चिकित्सक का धर्म सदैव पीड़ित के प्राणों की रक्षा करना रहा है। एक चिकित्सक जब किसी का इलाज कर रहा होता है तब रोगी की जीवनरक्षा उसकी प्रथम प्राथमिकता होती है। कार्यक्रम में अधिष्ठाता डॉ. तृप्ति नागरिया, पैथोलॉजी विभागाध्यक्ष डॉ. अरविंद नेरल, अस्पताल अधीक्षक डॉ. एसबीएस मौजूद रहे।

डॉ. के. पंधेर को स्मृति चिह्न देते राज्यपाल।

राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन ने हीरक जयंती के वार्षिकोत्सव पर किया संबोधन

नेहरू चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर का इतिहास गौरवशाली

[illegible]

रायपुर। पंडित जवाहरलाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय, रायपुर के हीरक जयंती वर्ष के अवसर पर वार्षिकोत्सव कार्यक्रम को अटल बिहारी वाजपेयी सभागार में आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के भूतपूर्व अधिष्ठाताओं एवं शिक्षकों का सम्मान एवं मेधावी छात्रों को पदक वितरण किया गया। साथ ही इस महाविद्यालय में एमबीबीएस प्रथम बैच 1963 में प्रवेश लेने वाले विद्यार्थियों को भी सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के तौर पर माननीय राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन की गरिमामय उपस्थिति थी। कार्यक्रम की अध्यक्षता आयुष विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. ए.के. चन्द्राकर ने की और विशिष्ट अतिथि के तौर पर सचिव चिकित्सा शिक्षा पी. दयानंद एवं संचालक चिकित्सा शिक्षा डॉ. विष्णु दत्त उपस्थित थे। राज्यपाल ने कहा कि मैं चिकित्सा महाविद्यालय के 60वीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य पर यहां आकर बेहद प्रसन्न महसूस कर रहा हूं। इस चिकित्सा महाविद्यालय का गौरवशाली इतिहास रहा है। इसका नाम देश के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के नाम पर रखा गया है। यह बहुत गर्व और सम्मान की बात है। सन 1963 में इसकी शुरुआत 60 विद्यार्थियों से हुई थी जो वर्तमान में 230 विद्यार्थियों के साथ प्रदेश का सबसे बड़ा मेडिकल कॉलेज बन गया है। कोविड-19 के महामारी के समय डॉक्टरों ने मानव समाज की रक्षा के लिये जो योगदान दिया है उसको भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने रामायण के एक प्रसंग का जिक्र करते हुये लंकापति रावण के राजवैद्य सुषेण द्वारा प्रभु श्री राम के समक्ष लक्ष्मण के प्राण बचाने के लिये किये गये प्रयास का जिक्र करते हुये कहा कि एक चिकित्सक का धर्म सदैव पीड़ित के प्राणों की रक्षा करना रहा है। एक चिकित्सक जब किसी का इलाज कर रहा होता है तब रोगी की जीवनरक्षा उसकी प्रथम प्राथमिकता होती है।

इनका किया गया सम्मान

महाविद्यालय के भूतपूर्व सीनियरमोस्ट टीचर 95 वर्षीय डॉ. जे.सी. गुप्ता, डॉ. श्रीमती के. पंधेर, डॉ. पी.के. मुखर्जी, डॉ. के. सुदर्शन, डॉ. जी.बी. गुप्ता, डॉ. डी.एस. तिवारी, डॉ. अनिल वर्मा, डॉ. सुबीर मुखर्जी, डॉ. एस.एल. आदिले और डॉ. पी.एल. यदु को माननीय राज्यपाल महोदय द्वारा सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के दूसरे चरण में सेवानिवृत्त चिकित्सा शिक्षक एवं 1963 एम.बी.बी.एस. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों को माननीय कुलपति डॉ. अशोक चन्द्राकर द्वारा शॉल-श्रीफल एवं प्रतीक चिन्ह भेंटकर सम्मानित किया गया।

हरिभूमि
रायपुर - रायपुर भूमि
Date 12 Dec 2023

मेडिकल कॉलेज का हीरक जयंती समारोह

कभी 60 विद्यार्थी ही ले पाते थे दाखिला अब 230 एमबीबीएस सीटों की सुविधा

रायपुर। मेडिकल कॉलेज का हीरक जयंती समारोह सोमवार को रखा गया। भूतपूर्व छात्रों के साथ चिकित्सक भी इसमें शामिल हुए। राज्यपाल विश्वभूषण हरिचंदन बतौर मुख्य अतिथि समारोह में शामिल हुए। कार्यक्रम में महाविद्यालय के भूतपूर्व अधिष्ठाताओं, शिक्षकों और प्रथम बैच के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर राज्यपाल श्री हरिचंदन ने अपने उद्बोधन में कहा, स्वास्थ्य सेवा का कार्य सर्वश्रेष्ठ कार्य है। जीवन के लिए संघर्ष करने वाले मरीजों के लिए डॉक्टर भगवान होते है। कोविड-19 के दौरान जब पूरी दुनिया भयभीत थी, तब डॉक्टर, नर्स, स्वास्थ्य कार्यकर्ता, फ्रंट लाइन वारियर्स बनकर राष्ट्र व जनता की रक्षा के लिए आगे रहते थे। उन्होंने कहा, इस महाविद्यालय के शिक्षक प्रत्येक छात्र को एक अच्छा डॉक्टर बनाने के लिए कड़ी मेहनत करते हैं। वर्षों की उनकी मेहनत यहां के छात्रों की सफलता में दिखाई देती है। शिक्षकों के समर्पण से विद्यार्थियों के भविष्य पर प्रभाव पड़ता है। अच्छे डॉक्टर बनने और दूसरों की सेवा करने के लिए उनकी कड़ी मेहनत गर्व करने लायक है।

राज्य का सबसे बड़ा चिकित्सा संस्थान

संस्थान ने उन वरिष्ठ शिक्षकों को याद किया, जिन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा शिक्षा क्षेत्र में समर्पित किया है। मुख्य अतिथि ने कहा कि यह अत्यंत गर्व का विषय है कि एक छोटा सा संस्थान जहां 60 विद्यार्थी ही प्रवेश ले पाते थे, वहां 230 विद्यार्थी एमबीबीएस पाठ्यक्रम में प्रतिवर्ष प्रवेश ले रहें है और यह राज्य का सबसे बड़ा चिकित्सा संस्थान बन गया है। एक शिक्षक के रूप में उनकी सेवाओं को वर्षों तक याद रखा जाएगा। पूर्व-कुलपतियों, पूर्व-डीन, प्रोफेसरों और शिक्षकों का अभिनंदन अपने आप में एक सम्मान है। उनके अनुभव, ज्ञान और आशीर्वाद वर्तमान और आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेंगे।

सम्मानित हुए मेधानी

हीरक समारोह में चिकित्सा शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर चिकित्सा शिक्षा विभाग के सचिव पी. दयानंद, संचालक चिकित्सा शिक्षा डॉ. विष्णु दत्त, आयुष चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक चंद्राकर, डीन डॉ. तृप्ति नागरिया, महाविद्यालय के प्रोफेसर व छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।

स्वास्थ्य सेवा का कार्य सर्वश्रेष्ठ कार्य – राज्यपाल

पं. जवाहर लाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय के हीरक जयंती समारोह में शामिल हुए राज्यपाल

रायपुर। राज्यपाल श्री विश्वभूषण हरिचंदन पं. जवाहर लाल नेहरू स्मृति चिकित्सा महाविद्यालय रायपुर के हीरक जयंती समारोह में शामिल हुए। उन्होंने इस कार्यक्रम में महाविद्यालय के भूतपूर्व अधिष्ठाताओं, शिक्षकों और प्रथम बैच के विद्यार्थियों को सम्मानित किया।

इस अवसर पर राज्यपाल श्री हरिचंदन ने अपने उद्बोधन में कहा कि स्वास्थ्य सेवा का कार्य सर्वश्रेष्ठ कार्य है। जीवन के लिए संघर्ष करने वाले मरीजों के लिए डॉक्टर भगवान होते है। कोविड-19 के दौरान जब पूरी दुनिया भयभीत थी, तब डॉक्टर, नर्स, स्वास्थ्य कार्यकर्ता, फ्रंट लाइन वारियर्स बन कर राष्ट्र व जनता की रक्षा के लिए आगे रहते थे। राज्यपाल ने कहा कि इस महाविद्यालय के शिक्षक प्रत्येक छात्र को एक अच्छा डॉक्टर बनाने के लिए कड़ी मेहनत करते है। वर्षों की उनकी मेहनत यहां के छात्रों की सफलता दिखाई देती है। शिक्षकों के समर्पण से विद्यार्थियों के भविष्य पर प्रभाव पड़ता है। अच्छे डॉक्टर बनने और दूसरों की सेवा करने के लिए उनकी कड़ी मेहनत गर्व करने लायक है। उन्होंने कहा कि यह अत्यंत गर्व का विषय है कि एक छोटा सा संस्थान जहां 60 विद्यार्थी ही प्रवेश ले पाते थे, वहां 230 विद्यार्थी एमबीबीएस पाठ्यक्रम में प्रतिवर्ष प्रवेश ले रहें है और यह राज्य का सबसे बड़ा चिकित्सा संस्थान बन गया है। राज्यपाल ने कहा कि यह संस्थान उन वरिष्ठ शिक्षकों को याद कर रहा है जिन्होंने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा शिक्षा क्षेत्र में समर्पित किया है। एक शिक्षक के रूप में उनकी सेवाओं को वर्षों तक याद रखा जाएगा। पूर्व-कुलपतियों, पूर्व-डीन, प्रोफेसरों और शिक्षकों का अभिनंदन अपने आप में एक सम्मान है। उनके अनुभव, ज्ञान और आशीर्वाद वर्तमान और आने वाली पीढ़ी के लिए प्रेरणा का स्रोत बनेंगे। कार्यक्रम में राज्यपाल श्री हरिचंदन ने चिकित्सा शिक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले मेधावी विद्यार्थियों को सम्मानित भी किया। इस अवसर पर चिकित्सा शिक्षा विभाग के सचिव श्री पी. दयानंद, संचालक चिकित्सा शिक्षा डॉ. विष्णु दत्त, आयुष चिकित्सा विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अशोक चंद्राकर, डीन डॉ. तृप्ति नागरिया, महाविद्यालय के प्रोफेसर, छात्र-छात्राएं उपस्थित थे।